जानता। यह याद रखने की बात है कि केदारनाथ सिंह मूलतः उन लोगों के कवि हैं जो दुनिया बनाते हैं लेकिन जिन्हें यह दुनिया न जानती है, न जानना चाहती है। इस अर्थ में वे महात्मा गाँधी के 'आखिरी आदमी' और डॉक्टर अम्बेडर के सपनों के कवि हैं। वे 'एक ठेठ किसान के सुख' को काव्य–विषय बनाते हैं और उदारीकरण के इस दौर में जब स्त्री को महज एक वस्तु में बदलने की हर संभव कोशिश की जा रही है तब कृतज्ञता का आदिम राग सुनाते हैं–

किसी को प्यार करना
तो चाहे चले जाना सात समुंदर पार
पर भूलना मत
कि तुम्हारी देह ने एक देह का
नमक खाया है।

केदार जी के अब तक के अंतिम संग्रह 'सृष्टि पर पहरा' में कई कविताएं छन्द में हैं और आखिरी कविता में जीवन का छन्द है। अमरता की पारम्परिक समझ और धारणा का प्रत्याख्यान करते हुए साधारण के औदात्य का गीत सुनाने वाला यह कवि धीरे से कहता है–

जाऊँगा कहाँ
रहूँगा यहीं
किसी किवाड़ पर
हाथ के निशान की तरह
पड़ा रहूँगा
किसी पुराने ताखे
या संदूक की गंध में
छिपा रहूँगा मैं
दबा रहूँगा किसी रजिस्टर में
अपने स्थायी पते के
अक्षरों के नीचे
या बन सका
तो ऊँची ढलानों पर
नमक ढोते खच्चरों की
घंटी बन जाऊँगा
या फिर माँझी के पुल की
कोई कील
जाऊँगा कहाँ
देखना
रहेगा सब जस का तस
सर्फ मेरी दिनचर्या बदल जाएगी
साँझ को जब लौटेंगे पक्षी
लौट आऊँगा मैं भी
सुबह जब उड़ेंगे
उड़ जाऊँगा उनके संग.....।

कहना होगा कि जब तक हिन्दी कविता का अस्तित्व रहेगा, केदारनाथ सिंह कहीं नहीं जाएंगे। उनकी कविताओं का होना मनुष्यधर्मी भरोसे का होना है।

बोध प्रश्न –1
निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दें।

1. केदारनाथ सिंह के प्रमुख संग्रहों के नाम लिखिए।

   .....
   .....
   .....
   .....

2. केदारनाथ सिंह की कविता में आमजन के संघर्ष के चित्रण का परिचय दीजिए।

   .....
   .....
   .....
   .....

3. मातृभाषाओं की पक्षधरता पर केदारनाथ सिंह की कविता में किस तरह विचार किया गया है? स्पष्ट कीजिए।

   .....
   .....
   .....
   ....

4. 'बाघ' कविता पर संक्षिप्त टिप्पणी कीजिए।

   .....
   .....
   .....
   .....

12.11 सारांश

आपने यह इकाई पढ़ ली है। इस इकाई को पढ़ने के बाद निश्चित रूप से आपने केदारनाथ सिंह की कविता की विशेषताओं को आत्मसात कर लिया है। आपने यह जान लिया होगा कि केदारनाथ सिंह हिंदी के ऐसे विशिष्ट कवि हैं जिनका गहरा प्रभाव 1980 के बाद की हिंदी कविता पर दिखाई देता है। उन्होंने हिंदी कविता में गांव और शहर के संघर्ष को वाणी दी। उनकी कविताएं इस बात का प्रमाण हैं कि उन्होंने लोक का पुनराविष्कार किया। इस महादेश की साधारण जनता को उनकी कविताओं में स्पष्ट नायकत्व मिला है।

केदारनाथ सिंह की कविताएं शोर के विरूद्ध सृजन के राग की कविताएं हैं। उनकी कविताएं नकारात्मकता और विध्वंस का प्रतिकार करते हुए एक संवेदनशील और चेतस विश्व के सृजन का स्वप्न देखती हैं। निश्चय ही इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप समकालीन हिंदी कविता और केदारनाथ सिंह की कविता के सामर्थ्य से परिचित हो गए होंगे/होंगी।

अभ्यास के लिए प्रश्न

1. हिंदी कविता में केदारनाथ सिंह का स्थान निर्धारित कीजिए।

   .....
   .....
   .....
   ....

2. केदारनाथ सिंह की कविता में उम्मीद के स्वर पर विचार कीजिए।

.....

.....

.....

....

3. केदारनाथ सिंह की भाषा में काव्यात्मकता पर टिप्पणी कीजिए।

.....

.....

.....

....

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY